मुस्लिम औरतों की इल्मी ख़िदमतें

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

विषय सूची

विषय | पृ०

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।"

भूमिका

इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि दीन (इस्लाम) का इल्म सीखने और उसकी ख़िदमत में मुस्लिम औरतों का अह्म हिस्सा रहा है। यहाँ तक कि लड़ाई के मैदान में ज़ख़्मियों को पानी पिलाने का काम भी उन्होंने किया है। दीन के इल्म के प्रचार-प्रसार के अलावा तिब्ब (चिकित्साशास्त्र), ख़त्ताती (सुलेखन कला) और अदब (साहित्य) वग़ैरा में भी उनकी दिलचस्पी रही है। तक़वा (ईश-भय), परहेज़गारी और ख़ुदा की पहचान के सिलसिले में भी कितनी ही औरतें अपने काम में बेमिसाल रही हैं।

इस किताब में दीन के इल्म की ख़िदमत के सिलसिले में औरतों का जो हिस्सा रहा है उसका एक संक्षिप्त जाइज़ा लिया गया है। आज भी जामिअतुस्सालिहात और औरतों की दूसरी यूनिवर्सिटियों और कॉलेजों से उम्मत की कितनी ही बेटियाँ आलमियत से फ़राग़त और सनदें हासिल कर रही हैं। दीन के इल्म में फ़ज़ीलत (मास्टर डिग्री) हासिल करने का जज़्बा और हौसला उनमें उभर रहा है।

इस छोटी-सी किताब को तरतीब देने का अस्ल मक़सद औरतों

का हौसला बढ़ाना है कि वे चाहें तो दीन के इल्म की बेहतरीन ख़िदमत अंजाम दे सकती हैं। औरतों के हलक़े और दायरे में इस्लाम की दावत का काम बड़े असरदार अंदाज़ में बहुत आसानी के साथ औरतें ही कर सकती हैं। दीन के इल्म और ज्ञान से सुसज्जित औरतें इस्लाम की दावत के मैदान में अपने शौहरों की मददगार और सहयोगी साबित हो सकती हैं।

ख़ाकसार
मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

क़ुरआन

अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ज़माने से ही औरतों को क़ुरआन मजीद से विशेष रूप से दिलचस्पी और लगाव रहा है। वे क़ुरआन को हिफ़्ज़ (कंठस्थ) करतीं और क़ुरआन लिखकर भी अपने पास रखती थीं।

क़ुरआन मजीद से ख़ास ताल्लुक़ रखनेवाली औरतों में हज़रत हफ़्सा-बिन्ते-सीरीन, हज़रत बैरम-बिन्ते-अहमद मालिकिय्या, हज़रत ख़दीजा-बिन्ते-अहमद फ़ासिय्या, हज़रत उम्मुल-ख़ैर-बिन्ते-अहमद-बिन-ईसा, हज़रत सलमा उम्मुल-ख़ैर-बिन्ते-मुहक़्क़िक़-बिन-अल-जज़री, हज़रत आइशा-बिन्ते-इबराहीम उम्मे-मुहम्मद दिमशक़िय्या, हज़रत आइशा-बिन्ते-इमरान मुतवल्ली और ऐसी ही दूसरी कितनी ही औरतों को शोहरत हासिल है।

इल्मे-तफ़सीर (क़ुरआन मजीद की व्याख्या) के मैदान में औरतों का ज़िक्र और तज़किरा कम मिलता है। गुज़रे हुए क़रीब के ज़माने की किताबों में एक बग़दादी ने अपनी किताब में दो औरतों का ज़िक्र किया है, जिन्होंने तफ़सीर के मैदान में कुछ काम किए हैं। आदिल और इसमाईल बग़दादी ने अपनी किताब में क़ुरआन मजीद की एक व्याख्याकार (मुफ़स्सिरा) औरत का ज़िक्र किया है।

आज के मौजूदा ज़माने में औरतों की एक बड़ी तादाद ने क़ुरआन मजीद के इल्म और ज्ञान में डॉक्ट्रेट के लिए लेख लिखे हैं।

नई सदी में तीन मुफ़स्सिरा औरतों का सविस्तार परिचय डॉक्टर अफ़ाफ़ अब्दुल-ग़फ़ूर हमीद ने किया है। जिनमें आइशा अब्दुर्रहमान-बिन्ते-शाती ने ऊँचा मक़ाम और दर्जा हासिल किया है। इन्होंने इस्लामी उलूम (इल्मों) की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया है। इनकी मशहूर किताब 'अत्तफ़सीरुल-बयानिय्यु लिल-क़ुरआनिल-करीमि' और 'अल-क़ुरआन व क़ज़ायल-इनसान' पर इन्हें फ़ैसल एवार्ड से नवाज़ा गया।

अत्तफसीरुल-बयानी अगरचे पूरे क़ुरआन मजीद की तफ़सीर (व्याख्या) नहीं है फिर भी कई पहलुओं से इस तफ़सीर को विशेषता प्राप्त है। यह किताब दो हिस्सों में है। मध्यम और छोटी सूरतों की तफ़सीर की गई है। बिन्ते-शाती क़ुरआन को हर पहलू से ख़ुद क़ुरआन से समझने पर ज़ोर देती हैं।

फिर उनके नज़दीक क़ुरआन का अध्ययन रिवायती तरीक़े से नहीं बल्कि विषय आधारित अन्दाज़ और तर्ज़ पर करना चाहिए। उनका कहना है कि क़ुरआन मजीद के एक शब्द की जगह कोई दूसरा शब्द नहीं ले सकता। यह बहुत ही ख़ास बात है।

ज़ैनब ग़ज़ाली (रह०) ने भी कई अहम किताबें लिखी हैं। अपनी तफ़सीर (व्याख्या) में उन्होंने लुग़वी (शब्दकोशीय) मसले और फ़िक़्ही व मस्लकी मतभेदों से परहेज़ किया है। उन्होंने ख़ास तौर से दावती पहलू पर ध्यान दिया है।

हन्नान लिहाम शाम (सीरिया) की एक प्रतिष्ठित औरत हैं।

क़ुरआनी विषयों पर उनकी कई किताबें हैं। वे तफ़सीर के सिलसिले में सहाबा (रज़ि॰) के कथनों पर भरोसा करती हैं। तफ़सीर में अदबी रंग नुमायाँ है। तफ़सीर का तर्ज़ विषय पर रखा गया है। वे हर सूरा को विषय के लिहाज़ से कई भागों में बाँटती हैं, फिर उनकी व्याख्या करती हैं। तफ़सीर में सामाजिक मसलों का हल भी पेश करती हैं। औरतों के मामलों की तरफ़ ख़ासकर ध्यान दिया है। मतभेदवाले मसलों से बचने का अन्दाज़ अपनाया है। तफ़सीर में मौजूदा मसलों को भी नज़रअन्दाज़ नहीं करतीं।

नए ज़माने की इन तफ़सीर करनेवाली औरतों के हालात और उनके काम के सिलसिले में त्रैमासिक पत्रिका तहक़ीक़ाते-इस्लामी (उर्दू) अलीगढ़, यू॰पी॰, अंक जुलाई-सितम्बर 2014 ई॰ देखें।

हदीस का इल्म

इतिहास के हर दौर में ऐसी औरतें रही हैं जिनसे हदीस के इल्म को बढ़ोत्तरी हासिल हुई और मर्दों तक ने उनसे इल्म हासिल किया। तफ़सीर अस्माउर्रिजाल की आख़िरी जिल्दों में ऐसी औरतों का ज़िक्र किया गया है।

प्यारे नबी (सल्ल॰) के मुबारक ज़माने में औरतों ने हदीस को फैलाने में हिस्सा लिया। आप (सल्ल॰) की वफ़ात के बाद कितनी ही सहाबी औरतें (रज़ि॰) हैं, जिनमें आप (सल्ल॰) की पाक बीवियाँ

भी शामिल हैं, कि हदीस की चाहत रखनेवालों ने उनसे फ़ायदा उठाया। उनमें हज़रत हफ़्सा (रज़ि॰), हज़रत उम्मे-हबीबा (रज़ि॰), हज़रत उम्मे-सलमा (रज़ि॰), हज़रत मैमूना (रज़ि॰) और हज़रत आइशा (रज़ि॰) के नामों से इल्म रखनेवाले बहुत अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं। ख़ास तौर से हज़रत आइशा (रज़ि॰) हदीस में सबसे ज़्यादा अहमियत रखती हैं। वे हदीस की व्याख्या भी करती थीं। सबसे ज़्यादा हदीस बयान करनेवालों में हज़रत आइशा (रज़ि॰) का शुमार होता है, उनकी बयान की हुई हदीसों की तादाद 2210 है। हज़रत उम्मे-सलमा (रज़ि॰) की बयान की हुई हदीसों की तादाद 378 है। फ़ातिमा-बिन्ते-यमान बड़े ऊँचे दर्जे की हदीस की आलिमा थीं। हज़रत आबिदा अल-मदनिय्या, अब्दा-बिन्ते-बिशर, उम्मर-सक़फ़िय्या और हज़रत ज़ैनब ने हदीस पढ़ाने और सिखाने का एहतिमाम (प्रबन्ध) किया। हज़रत आबिदा हदीस के आलिम इब्ने-यज़ीद की बाँदी थीं, इन्होंने मदीना के आलिमों से बहुत ही ज़्यादा हदीसें बयान की हैं। हज़रत आबिदा ने दस हज़ार हदीसें मदीना के आलिमों से बयान की हैं। हज़रत ज़ैनब-बिन्ते-सुलैमान हदीस की आलिमा थीं, उनके शागिर्दों (शिष्यों) में बेशुमार औरतें और मर्द शामिल थे। मर्द परदे की ओट से हदीस का इल्म सीखा करते थे।

सहाबा (रज़ि॰) और ताबिईन के ज़माने में भी औरतों ने हदीस की ख़िदमत में हिस्सा लिया, हफ़्सा-बिन्ते-इब्ने-सीरीन, उम्मे-दरदा

सुग़रा, अमरा-बिन्ते-अब्दुर्रहमान उस ज़माने की जानी-मानी हदीस की आलिमा थीं। उम्मे-दरदा को इयास-बिन-मुआविया इल्मो-फ़ज़्ल और हदीस के इल्म में सबसे ऊँचा मक़ाम देते थे, अमरा-बिन्ते-अब्दुर्रहमान को हज़रत आइशा (रज़ि॰) की बयान की हुई हदीसों पर सनद का दर्जा हासिल था।

उस ज़माने की कुछ दूसरी औरतें भी हदीस सिखाने और पढ़ाने में मशहूर रही हैं। अब्दा-बिन्ते-बिशर आबिदा का नाम पहले आ चुका है। उम्मे-उमर अस्सक़फ़िय्या, ज़ैनब, नफ़ीसा-बिन्ते-हसन-बिन-ज़ियाद, ख़दीजा उम्मे-मुहम्मद अब्दह बिन्ते-अब्दुर्रहमान इन सभी को हदीस पर पूरी महारत हासिल थी।

हदीसों के सभी मशहूर संग्रहों में ऐसी औरतों के नाम मिलते हैं जिनसे संग्रह करनेवालों ने सीधे-सीधे उन्हीं से हदीसें बयान की हैं।

चौथी सदी हिजरी में हदीस में जिन औरतों ने शोहरत (प्रसिद्धि) हासिल की है उनमें फ़ातिमा-बिन्ते-अब्दुर्रहमान, फ़ातिमा, अमतुल-वहीदा उम्मुल-फ़तह, अमतुस्सलाम और जुमआ-बिन्ते-अहमद ख़ास हैं।

पाँचवी सदी हिजरी में अनेकों औरतों ने हदीस में शोहरत हासिल की। मिसाल के तौर पर फ़ातिमा-बिन्ते-हसन, करीमतुल-मरजिय्या और तरीन-बिन्ते-अहमद सहीह बुख़ारी पर सनद की हैसियत रखती थीं। ख़तीब बग़दादी और अन्दलुस के हदीस के आलिम अल-हुमैदी ने इन्हीं से सहीह बुख़ारी पढ़ी थी।

फ़ातिमा-बिन्ते-मुहम्मद, शुहदा-बिन्ते-अहमद और सत्तुल-वुज़रा छठी सदी हिजरी की मशहूर हदीस की आलिमा थीं। सत्तुल-वुज़रा और कुछ दूसरी औरतें बुख़ारी के अलावा हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाती थीं। इसी लिए उम्मुल-ख़ैर फ़ातिमा-बिन्ते-अली और फ़ातिमा शीराज़िय्या सहीह मुस्लिम का दर्स देती थीं। फ़ातिमा जूज़दानिया और अनीसा ने तबरानी के तीनों संग्रहों को अपने हलक़े में सुनाया। ज़ैनब मुसनद अहमद-बिन-हम्बल का दर्स देती थीं। ज़ैनब-बिन्ते-अहमद-बिन-उमर ने मुसनद दारमी और मुसनद अब्द-बिन-हुमैद की अपने छात्रों के सामने रिवायत (हदीस बयान) की।

ज़ैनब-बिन्ते-अहमद पूरी मुसनद अबी-हनीफ़ा, शमाइले-तिरमिज़ी और इमाम तहावी की शरह मआनियुल-आसार का दर्स देती थीं। इब्ने-असाकिर जो दिमश्क़ के इतिहास के मशहूर लेखक हैं मर्दों के अलावा आठ सौ (800) औरतों से हदीस का दर्स लिया। नवीं सदी के मशहूर हदीस के आलिम अफ़ीफ़ुद्दीन जुनैद ने सुनन दारमी फ़ातिमा-बिन्ते-अहमद-बिन-क़ासिम से पढ़ी थी। ज़ैनब-बिन्ते-शअरी से हदीस का इल्म हासिल करनेवालों में मशहूर लेखक इब्ने-ख़लकान भी शामिल हैं।

आठवीं और नौंवी सदी हिजरी में हदीस में समझ-बूझ और महारत रखनेवाली औरतों की अधिकता रही है। इब्ने-हजर अस्क़लानी ने अपनी किताब अद्दुररुल-कामिना में आठवीं सदी हिजरी की एक

सौ सत्तर (170) ख़ास हस्तियों के हालात लिखे हैं। जिनमें अधिकतर को हदीस के इल्म में दख़ल हासिल था। इब्ने-हजर अस्क़लानी को उनमें से अनेकों औरतों से शिक्षिका और शिक्षार्थी का सम्बन्ध हासिल रहा है। शोबुल-अरब मशहूर हदीस की आलिमा थीं, हदीस के आलिम अल-इराक़ी की शिक्षिका रही हैं। नवीं सदी हिजरी की हदीस की आलिमा औरतों के हालात मुहम्मद-बिन-अब्दुर्रहमान सख़ावी ने लिखे हैं। उमर-बिन-फ़हद ने भी मुअ्जमुश्शुयूख़ में उस ज़माने की एक सौ तीस (130) से अधिक हदीस की आलिमा औरतों का ज़िक्र किया है। दसवीं सदी हिजरी से हदीस से औरतों की दिलचस्पी कम हो गई, लेकिन यह ख़याल सही नहीं है कि हदीस से दिलचस्पी लेनी उन्होंने बिलकुल छोड़ दी थी।

फ़िक़्ह

फ़िक़्ह अस्ल में इस्लामी शरीअत (नियमों) के अमली हुक्मों को दलीलों और विस्तार से जानने का नाम है। पहले के ज़माने में औरतों को दीनी तालीम (शिक्षा) हासिल करने का बहुत ही ज़ौक-शौक़ रहा है। उम्मे-बिश्र अनसारिया (रज़ि॰) को दीन के इल्म और फ़िक़्ह में बड़ा मक़ाम हासिल था। हज़रत हफ़्सा (रज़ि॰) को उम्मे-बिश्र अनसारिया से गहरा ताल्लुक़ था। इसी तरह उन्हें हदीस और फ़िक़्ह सम्बन्धी इल्मों को जानने का अच्छा ख़ासा अवसर

प्राप्त हुआ। वे फ़िक़्ह के इल्म की आलिमा बन गईं।

हज़रत उम्मे-दरदा ख़ैरा (रज़ि॰) हज़रत अबू-दरदा (रज़ि॰) की बीवी थीं। दीन के मामलों में, दीन के फ़िक़्ही मामलों में और सही-पक्की राय देने के सिलसिले में बेहतरीन विशेषताओं और ख़ूबियों की मालिक थीं। इमाम इब्नें-क़य्यिम (रह॰) ने बाईस (22) ऐसी सहाबी औरतों का ज़िक्र किया है जो फ़िक़्ह और फ़तवा देने में मशहूर थीं।

हज़रत फ़ातिमा-बिन्ते-अलाउद्दीन हनफ़ी बड़े ऊँचे दर्जे की फ़िक़्ह की आलिमा मानी जाती थीं। अमतुल-वाहिद-बिन्ते-क़ाज़ी हुसैन ने फ़िक़्ह को ज़बानी याद किया। शाफ़िई-फ़िक़्ह में उन्हें कमाल हासिल था।

हज़रत उम्मे-ईसा-बिन्ते-इबराहीम बग़दादिय्या भी अपने वक़्त की जानी-मानी मशहूर फ़िक़्ह की आलिमा थीं।

हज़रत अमतुर्रहमान-बिन्ते-शेख तक़ीयुद्दीन भी बड़े ऊँचे दर्जे की फ़िक़्ह की आलिमा थीं। उन्हें 'सत्तुल-फ़ुकहा' के लक़ब (उपाधि) से नवाज़ा गया था।

इनके अलावा और कितनी ही फ़िक़्ह का इल्म रखनेवाली औरतें हैं जिन्होंने इस सिलसिले में नुमायाँ काम अंजाम दिए हैं।

दर्सगाहें

इल्म सिखाने का रिवाज और आगाज़ हज़रत आइशा (रज़ि॰) से शुरू हुआ, फिर यह सिलसिला बड़े पैमाने पर चला। चौथी सदी हिजरी तक औरतों ने अपने घर को ही शिक्षा (तालीम) का केन्द्र बनाए रखा, जिनसे औरतों के अलावा आलिम, फ़िक़्ह के आलिम और बुज़ुर्ग लोग भी फ़ायदा उठाते थे। बाद में मदरसे बनने लगे। लड़कियों के मदरसों को क़ायम करने का अमली काम किया गया। औरतें शिक्षकों के अलावा वक़्त के बड़े-बड़े मदरसों में रहकर भी हदीस का इल्म हासिल करती थीं।

औरतों का सबसे पहला मदरसा पश्चिमी अक़्सा में फ़ाश में 245 हिजरी में क़ायम हुआ जो आज भी जामिअतुल-क़रविय्यीन के नाम से मौजूद है। इसको उम्मुल-बनीन फ़ातिमा-बिन्ते-मुहम्मद-बिन-अब्दुल्लाह फ़हरिय्या (रह॰) ने बनवाया था, उनकी बहन मरयम ने उसी साल 245 हिजरी में एक मस्जिद बनवाई जिसको बाद में जामिउल-अन्दलुस के नाम से शोहरत मिली। इसमें सदियों तक बहुत-से इल्म और फ़न की तालीम दी जाती रही।

तहक़ीक़ से पता चला है कि उमर मस्जिद दिमश्क़ की यूनिवर्सिटी में 500 छात्राएँ हास्टल में रहकर तालीम हासिल करती रहीं। नुऐमा-बिन्ते-अली और उम्मे-अहमद ज़ैनब-बिन्ते-अल-मक्की और दूसरी औरतों ने बड़े मदरसों मिसाल के तौर पर मदरसा

अज़ीज़िय्या में रहकर तालीम दी। मरयम अन्दलुसिय्या ने चौथी सदी हिजरी में इशबीलिय्या में एक दर्सगाह क़ायम की, जिसमें दूर-दूर से आकर औरतें इल्म और अदब की तालीम हासिल करती थीं।

फ़ख़रुन्निसा मशहिदा (छठी सदी हिजरी) जो इल्मो-फ़ज़्ल में मशहूर थीं, ख़लीफ़ा की तरफ़ से उन्हें एक बड़ी जागीर (इनाम में प्राप्त ज़मीन) मिली थी। उसकी आमदनी से दजला नदी के किनारे एक शानदार दर्सगाह बनवाई। सैकड़ों छात्र तालीम हासिल करते, जिनके सारे ख़र्चे उन्होंने अपने जिम्मे ले रखे थे। अन्दलुस की आलिमा-फ़ाज़िला फ़ातिमा ग़ालीमा-बिन्ते-मुहम्मद ने भी अपना बड़ा मदरसा क़ायम किया जिसमें औरतों को तालीम दी जाती थी। ज़ैनब-बिन्ते-अब्दुर्रहमान (615 हिजरी) इल्मो-फ़ज़्ल में जानी-मानी थीं। अब्बासी ख़लीफ़ा ने उन्हें इजाज़त दी कि वे अब्बासी सल्तनत (राज्य) में जहाँ चाहें दर्सगाह क़ायम करें और फ़िक़्ह (शरीअत) का दर्स दें। सुलतान सलाहुद्दीन की बहन एक आलिमा-फ़ाज़िला औरत थीं, उन्होंने दिमश्क़ के मक़ाम क़ासयून पहाड़ी में एक शानदार बड़ी दर्सगाह बनवाई, जिसे मदरसा ख़ातूनिय्या के नाम से शोहरत हासिल हुई। उन्होंने ख़र्चों के लिए एक बड़ी जायदाद वक़्फ़ की थी।